जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

1 फ़रवरी 2024

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया में डेनमार्क के प्रोफेसर अन्ना सिरकोवा ने दिया लेक्चर

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के मनोविज्ञान विभाग ने 30 जनवरी 2024 को डीन कार्यालय, सामाजिक विज्ञान संकाय के सेमिनार कक्ष में प्रोफेसर अन्ना सिरकोवा द्वारा " साइकोलोजी ऑफ़ टाइम: बिफोर, आफ्टर और एंड इन बिटवीन" पर एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया।

प्रोफेसर सिरकोवा एक प्रतिष्ठित क्लिनिकल मनोवैज्ञानिक हैं, जो समय परिप्रेक्ष्य में विशेषज्ञ हैं, और कोपेनहेगन में अस्तित्व संबंधी विश्लेषण और लॉगोथेरेपी के साथ काम करते हैं। डॉ. सिरकोवा की विद्वतापूर्ण गतिविधियाँ समय की जटिलताओं को उजागर करने, यह जांचने पर केंद्रित हैं कि व्यक्ति अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य को कैसे देखते हैं, और निर्णय लेने और कल्याण पर परिणामी प्रभाव डालते हैं। वह टाइम पर्सपेक्टिव नेटवर्क में बोर्ड की प्रमुख हैं, और इस आकर्षक अवधारणा पर अंतर-अनुशासनात्मक संवाद को बढ़ावा देते हुए 40 से अधिक देशों के उत्साही लोगों को एकजुट किया है।

मनोविज्ञान विभाग के छात्रों, पीएचडी शोधार्थियों और संकाय सदस्यों ने उत्साहपूर्वक उनकी आकर्षक बातें सुनीं। व्याख्यान की शुरुआत सब्जेक्ट एसोसिएशन की छात्र सदस्य सोनिया रावत की शुरुआती टिप्पणियों से हुई। विभाग की अध्यक्ष प्रोफेसर शीमा अलीम ने जामिया और विभाग में प्रोफेसर अन्ना सिरकोवा का स्वागत किया और विभाग की शोभा बढ़ाने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

डॉ. सिरकोवा का व्याख्यान समय परिप्रेक्ष्य के क्षेत्र में अनुसंधान पर केंद्रित था। उन्होंने टाइम पर्सपेक्टिव नेटवर्क द्वारा किए जा रहे कार्यों से दर्शकों को परिचित कराने के लिए कोपेनहेगन में तीसरे टाइम पर्सपेक्टिव सम्मेलन का एक वीडियो प्रस्तुत किया। फिर उन्होंने समय के मनोविज्ञान: समय अभिविन्यास और समय परिप्रेक्ष्य पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने जोम्बार्डो की टाइम पर्सपेक्टिव इन्वेंटरी जैसे क्षेत्र में नवीनतम विकास पर प्रकाश डाला।

व्याख्यान के बाद एक इंटरैक्टिव प्रश्नोत्तरी सत्र हुआ, जिसमें उपस्थित लोगों को डॉ. स्मिथ के साथ सीधे जुड़ने का मौका मिला। प्रश्न समय परिप्रेक्ष्य, अस्तित्ववाद और समय परिप्रेक्ष्य के अध्ययन के अंतर-सांस्कृतिक मुद्दों और 'स्वयं' और समय परिप्रेक्ष्य के बीच अंतर से संबंधित थे।

प्रश्नोत्तर सत्र के बाद, व्याख्यान फिर से शुरू हुआ, जिसके दौरान प्रोफेसर सिरकोवा ने संतुलित समय परिप्रेक्ष्य (बीटीपी) की अवधारणा पर चर्चा की, उच्च या निम्न बीटीपी का क्या मतलब है, और दुनिया भर के देश अपने समय परिप्रेक्ष्य में कैसे भिन्न होते हैं। इसके बाद प्रश्नोत्तर सत्र का एक और दौर हुआ। प्रो. सिरकोवा ने अपने व्याख्यान का समापन इस बात पर किया कि हम संतुलित समय परिप्रेक्ष्य का आगे कैसे अध्ययन कर सकते हैं और इसके अंतर-सांस्कृतिक निहितार्थ क्या हैं।

अंत में, प्रोफेसर नावेद इकबाल ने एक अद्वितीय और सामयिक विषय पर उनकी ज्ञानवर्धक प्रस्तुति के लिए प्रोफेसर अन्ना सिरकोवा को धन्यवाद दिया। व्याख्यान से छात्र और संकाय सदस्य बहुत लाभान्वित हुए और इसने संकाय और छात्रों के बीच अध्ययन और अनुसंधान का एक नया क्षेत्र खोल दिया।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया